Pushpamala of Mahamahopadhyaya Rudradhara (1400 A.D.)

A manual of flowers and leaves suggested in Hindu rituals, composed by Mahamaopadhyaya Rudradhara (1400 A.D.) a famous scholar of theology from Mithila, edited first from manuscript written in Tirahuta or Maithili script and translated into Maithili by Bhavanath Jha. It was published in the souvenir of the Post Graduate Department of Sanskrit Grammar of Kameshvara Singh Darbhanga Sanskrit University, Darbhanga (Bihar) in 2012.

महामहोपाध्याय-रुद्रधर विरचित

पुष्पमाला

सम्पादक

पं. भवनाथ झा

एम. ए. (संस्कृत) एवं साहित्याचार्य,
प्रकाशन एवं शोध पदाधिकारी
महावीर मन्दिर, पटना
(बिहार)

Pushpamala of Mahamahopadhyaya Rudradhara (1400 A.D.)

A manual of flowers and leaves suggested in Hindu rituals, composed by Mahamaopadhyaya Rudradhara (1400 A.D.) a famous scholar of theology from Mithila, edited first from manuscript written in Tirahuta or Maithili script and translated into Maithili by Bhavanath Jha. It was published in the souvenir of the Post Graduate Department of Sanskrit Grammar of Kameshvara Singh Darbhanga Sanskrit University, Darbhanga (Bihar) in 2012.

नाम – **पं. भवनाथ झा**
पितृनाम – पं. अमरनाथ झा
जन्मस्थान – हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर,
मधुवनी (विहार)
जन्मतिथि – 23 सितम्बर, 1968 ई.
शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत), साहित्याचार्य
प्रकाशित रचना –
(1) **बुद्धचरितम्** (अश्वघोष कृत महाकाव्य के अनुपलब्ध अंश का संस्कृत भाषा में काव्यमय अनुवाद), महावीर मन्दिर प्रकाशन से 2013 में प्रकाशित।
(2) **भ्रूण-पंचाशिका**- (कन्या-भ्रूणहत्या विषयक 50 श्लोकों का संस्कृत प्रबन्धकाव्य)
मातृभाषा मैथिली में दर्जनों कथाओं का विभिन्न पत्रिकाओं एवं संग्रहों में प्रकाशन।
सम्पादन –
(1) **अगस्त्य-संहिता**
(2) **दुर्गासप्तशती**
(3) म. म. परमेश्वर झा कृत **यक्षसमागमम्**
(4) म. म. रुद्रधर कृत **पुष्पमाला**
(5) म.म. पशुपतिकृत **व्यवहाररत्नावली**
(6) म.म. रुचिपतिकृत **नाह्निदत्तपञ्चविंशतिकाविवरणम्**।
धर्मायण, महावीर मन्दिर, पटना से प्रकाशित धार्मिक एवं सांस्कृतिक शोधपरक पत्रिका।
विशेष दक्षता –
मिथिलाक्षर एवं देवनागरी की पाण्डुलिपियों से सम्पादन का विशेष अनुभव।
सम्प्रति – प्रकाशन एवं शोध पदाधिकारी, महावीर मन्दिर, पटना

म०म० रुद्रधरकृत पुष्पमाला

(कोन देवताकेँ कोन फूल चढ़ाबी)

अनुवादक एवं सम्पादक
पं० श्रीभवनाथ झा,
महावीर मन्दिर, पटना

भूमिका

'वर्षकृत्य' बनओनिहार म०म० रुद्रधर उपाध्याय (1400 ई.) धर्मशास्त्र ओ व्याकरणक प्रसिद्ध आचार्य छलाह । दरिहरा वंशक लक्ष्मीधर हिनक पिता छलथिन्ह । हिनके अनुज पृथ्वीधर उपाध्याय मृच्छकटिकनाटकक टिप्पणी लिखने छथि । रुद्रधरकृत व्रतपद्धति, श्राद्धविवेक, अष्टाध्यायीवृत्ति, वार्तिकसंग्रह इत्यादि ग्रन्थ उपलब्ध अछि ।

'पुष्पमाला' नामक लघु पाण्डुलिपि रुद्रधरकृत मिथिलाक्षरमे लिखल अछि । एहि पोथीमे पूजामे फूलक उपयोगिता देखाओल गेल अछि आ कोन देवता केँ कोन फूल अतिप्रिय छनि आ कोन फूल कोन देवता केँ नहि चढ़ाबी– एकर विवेचन कएल गेल अछि । अत: प्रत्येक धार्मिक व्यक्तिक लेल एहि पोथीक उपयोगिता छैक ।

मूल ग्रन्थ संस्कृतभाषामे अछि । एकरा सभव्यक्तिक बुझबाक लेल मैथिली अनुवाद सहित प्रस्तुत कएल जा रहल अछि । संगहि प्रत्येक फूलक परिचायक विवरण दए एकरा अधिक उपयोगी बनएबाक प्रयास कएल गेल अछि ।

मकरसंक्रान्ति
15.01.2012

–भवनाथ झा

महामहोपाध्याय रुद्रधर विरचिता

पुष्पमाला

नमस्तस्यै

अथ सूर्यस्य कृते प्रशस्तपुष्पाणि

जाती कुन्द शमी कुशेशय-कुशाशोकं बकं किंशुकं
पुन्नागङ्करवीर-चम्पक-यवा-नेपालिका-कुब्जकम् ।
वासन्ती शतपत्रिका विचकिलं मन्दारमर्क्काह्वयं,
पीताम्लानक-नागकेशरमिदं पुष्पं रवेः शस्यते ॥ 1 ॥
लोध्रं कैरवमुत्पलञ्च सकलं सिंहास्यकं पाटला
यूथी कुङ्कुम-कर्णिकार-तिलकं बाणं कदम्बं जया ।
काशं केसर केतकी मरुबकं द्रोणं त्रिसन्ध्याह्वयं,
पुष्पं शस्तमिदं च पूजनविधौ सर्व्वं सहस्राच्चिर्षः ॥ 2 ॥

पुष्पं शस्तं भृङ्गराज-शाल्मली-काञ्चनालजम् ।
निषिद्ध-विहितं सूर्य्ये तगरं कण्टकारिका ॥ 3 ॥
तमाल-तुलीस-विल्व-शमी-भृङ्गारजोद्भवम् ।
केतकी-दूर्वयोर्द्धात्र्याः पत्रं दिनकरप्रियम् ॥ 4 ॥
गुञ्जापराजितोन्मत्तं वराहाक्रान्तया सह ।
आम्रातकमिदं पुष्पं निषिद्धं सूर्य्यपूजने ॥ 5 ॥

इति सूर्य्यस्य ।

अनुवाद

जाती (चमेली, कुन्द, शमी (सैनी), कुशेशय (कमल), कुश, अशोक, बक (बकहुल), किंशुक (पलाश), पुन्नाग (पुलाल, उजरा कमल), करबीर, चम्पक (चम्पा), यवा (ओड़हुल), नेपालिका (नेवारि), कुब्जक (कुआ), वासन्ती, शतपत्रिका (कमलक प्रभेद), विचकिल (मदना चमेली), मन्दार (आक), पीताम्लानक (पितपियरी), नागकेशर (लंकेसर फूल)– एतेक फूल सूर्यक पूजामे प्रशस्त अछि । 1 ॥

लोध्र (लोध), कैरव (भेंट), सभ प्रकारक उत्पल (लाल कमल आदि), सिंहास्यक (बाकस), पाटला (पाँड़रि), यूथी (जूही), कुङ्कुम, कर्णिकार (कनैल), तिलक (तिलैया), बाण (पीयर फूल बला झाँटि), कदम्ब, जया (जैंती), कास, केसर (केसरि), मरुबक (मरुआ), द्रोण (दनूफ), त्रिसन्ध्य (संझा फूल), एतेक फूल सूर्य्यक पूजामे प्रशस्त अछि ॥ 2 ॥

सूर्यक प्रशस्त पुष्प– चमेली, कुन्द, सैनी (शमी), कमल, कुश, अशोक, बकहुल, पलाश, पुंनाग, करबीर, चम्पा, ओड़हुल, नेवारि, कुआ, लाल कुन्द, कमल, विचकिल, मन्दार (आक), पितपिअरी, नागकेसर, लोध, भेंट, कमलक सभ प्रभेद, बाकस, पाटला, जूही, कंकुम, कनैल, तिलैय, पीयर कटसरैया, कदम्ब, जया, काश, केसर, केओला, मरुआ, दनूफ, त्रिसन्ध्या ।

भङरिया, सिम्मड़, कचनार इहो तीनू फूल प्रशस्त अछि, मुदा तग्गर आ काँटियारीक फूल निषिद्ध अछि ॥ 3 ॥

तमाल, तुलसी, वेल, शमी, भङरिया, केओला, दूवि आ धात्री क पात सूर्य केँ प्रिय छनि अर्थात् सूर्यक पूजामे प्रशस्त अछि ॥ 4 ॥

करजनी, अपराजिता, धथूर, वराहाक्रान्ता (रोहिड़) आ अमड़ा एकर फूल सूर्यक पूजामे निषिद्ध अछि ॥ 5 ॥

अथ शिवस्य

नेपाली बकुलं बकं विचकिलं काशं कुशं किंशुकं
धुत्तूरार्क्क-जया-कदम्ब-कुटजं मन्दार-नागार्ज्जुनम् ।
सेवन्ती तगरं सरोजमुभयं सर्व्वोत्पलं पाटला
पुन्नागङ्करबीर-कुङ्कुममिदं पुष्पं शिवे शस्यते ॥ 6 ॥

कुब्जाशोक-शमी-कुरुण्टशिखिनी जाती कुसुम्भं शणो
शीरञ्चम्पक-मोचकञ्च बृहती लोध्रं तथा कैरवम् ।
कह्लारं गिरिकर्णिकानुधवलापामार्गकं शिंशपा
विल्वं द्रोणमिदञ्च पूजनविधौ पुष्पं पुरद्वेषिणः ॥ 7 ॥
कूष्माण्डतिलबाणानां चूतचित्रकयोस्तथा ।
पुष्पं कुरुबकानाञ्च कोकिलाक्षं शिवप्रियम् ॥ 8 ॥
कुसुमं काञ्चनालस्य शाल्मलीकाशनालयोः ।
दलञ्च भृङ्गराजस्य धात्र्याश्च शिववल्लभम् ॥ 9 ॥
अपामार्गशमी दूर्व्वा शिंशपा तुलसीदलम् ।
विल्वपत्रं मरुबकं शस्तं च खदिरं शिवे ॥ 10 ॥
शिरीष-बन्धूक-बिभीतकानां
मदन्तिका-पुण्ड्रक-केतकीनाम् ।
करञ्ज-सर्ज्जेन्द्र-महीरुहाणां
कुन्दस्य पुष्पं न शिवे प्रशस्तम् ॥ 11 ॥
भण्डकानिम्बपुष्पञ्च धातकी श्वेतपाटला ।
न शस्तं यूथिकापुष्पं पूजायां पुरवैरिणः ॥ 12 ॥

इति शिवस्य ।

नेवारि, भालसरि, बकहुल, बड़हर, काश, कुश, पलाश, धथूर, आक, जैंती, कदम्ब, कोरैआ, मन्दार (उजरा आक), नाग (नागकेशर-लंकेसर फूल), अर्जुन, सेवन्ती, (सेउती), तगर, दुनू प्रकारक कमल (उज्जर आ लाल), सभ प्रकारक उत्पल (दिन आ रातिमे फुलाएवला), पाटला (पाड़रि), पुन्नाग (पुलाल), करवीर, कुङ्कुम (केसरि) ई सभ फूल शिव क पूजामे प्रशस्त अछि ॥ 6 ॥

कुब्ज (कुआ), अशोक, सैनी, कुरुण्ट (पितपिअरी), शिखिनी (संखाहुली), चमेली, कुसुम्भ (कुसुम), शण (सनपटुआ), उशीर (खस), चम्पा, मोचक (मुनिगा-सोँहिजन), बृहती (कँटियारी), लोध, भेंट, कह्लार, (कड़हरक फूल), गिरिकर्णिका (अपराजिता), अनुधवला (   ), अपामार्ग (चिड़चिड़ीक मज्जर) , शिंशपा (सीसो), बेल, द्रोण (दनूफ) एतेक शिव पूजामे प्रशस्त फूल अछि ॥ 7 ॥

कुम्हड़, तिल, बाण (पीयर फूल वला झाँटि), चूत (आमक मज्जर), चित्रक (चितौड़), कुरुबक (लाल फूल वला झाँटि), आ कोकिलाक्ष (तालमखाना)क फूल शिव केँ प्रिय छनि ॥ 8 ॥

कचनार, सिम्मड़, कास आ सरपतक फूल तथा भड़रिया आ धात्रीक पात शिवक प्रिय थिक ॥ 9 ॥

चिड़चिड़ी, सैनी, दूबि, सीसो, तुलसी, वेल, मरुआ आ खयरक पात शिवक पूजामे प्रशस्त अछि ॥ 10 ॥

शिवक हेतु प्रशस्त पुष्प रुद्रधारकृत वर्षकृत्यमे– आक, धथूर, करवीर, जाती, कर्णिका, शमी, द्रोण (दनूफ), पलाश– अष्टाक्षरमन्त्रसँ अर्पित करी ।

शिरीष, बन्धूक (मधुरी), बहेड़, मदन्तिका (नेवारि), पुण्ड्रक (कुन्दक एक प्रभेद), करञ्ज (करौना), सर्ज (सँखुआ), इन्द्र (कुटज), महीरुह (सागवान) आ कुन्दक फूल शिवपूजामे प्रशस्त नहि अछि ॥ 11 ॥

भण्डका (मजीठ), नीमक फूल, धात्री, उजला पाड़रि आ जूही ई शिवक पूजामे प्रशस्त नहि अछि ।। 12 ।।

अथ देव्याः

यूथी कुन्द-कदम्ब-किंशुक-बकाशोकं जवागस्त्यकं
बन्धूकं बकुलं च केतकियुगं श्वेतारुणम्पङ्कजम् ।
लोध्रं चम्पकमुत्पलेन्द्र-सुरसं सद्रोणपुष्पं शमी
मन्दारं शतपत्रिका विचकिलं पुष्पं शिवायाः प्रियम् ।। 13 ।।

पुन्नाग-नाग-करवीरक-कर्णिकारं
जाती कुरुण्ट-तगरार्ज्जुन-माधवीनाम् ।
धुत्तूरकार्क्कबृहतीगिरिकर्णिकानां
पुष्पं प्रशस्तमधिकं विदुरम्बिकायाः ।। 14 ।।

मरुबक-दमनक-दूर्व्वा-तुलसी-शैलूष-धान्यानाम् ।
पत्रं शस्तमुमायाः कुङ्कुम-कूष्माण्ड-शिंशपापुष्पम् ।। 15 ।
दुर्गान्यदेवीपूजायां मन्दारार्क्कं न शस्यते । इति देव्याः ।

जूही, कुन्द, कदम्ब, पलाश, बकहुल, अशोक, जवा (ओड़हुल), अगस्त्यक (अगस्त्य), बन्धूक (मधुरी), भालसरि, दुनू प्रकारक केतकी (केओला), उज्जर आ लाल कमल, लोध, चम्पा, उत्पल (भेंट, कुमुदिनी आदि), इन्द्र (कुटज-कोंरैआ), सुरस (रास्ना), द्रोण (दनूफ), शमी (सैनी), मन्दार (आक), शतपत्रिका (सौंफ) विचकिल (कमल) ई सभ फूल काली, गौरी, दुर्गा आदि देवीकेँ पूजामे प्रिय छनि ।। 13 ।।

पुलाल, नाग केशर (लंकेसर), करवीर, कनैल, चमेली, कुरुण्ट (पितपियरी), तगर, अर्जुन, माधवी (लाल कुन्द), धथूर, आक, बृहती (कँटगैनी), गिरिकर्णिका (अपराजिता) एतेक फूल काली आदि भगवतीक पूजामे विशेष प्रशस्त मानल गेल अछि ।। 14 ।।

मरुआ, दौना, दूबि, तुलसी, शैलूष (बेल) आ धानक पात गौरीक पूजामे प्रशस्त अछि तथा केसरि, कुम्हड़, आ सीसोक फूल प्रशस्त अछि ।। 15 ।।

दुर्गा केँ छोड़ि आन देवीक पूजामे उजरा आक प्रशस्त नहि अछि ।। 16 ।।

अथ विष्णोः

कुन्दं कुब्जक-कर्णिकार-तिलकं सेवन्तिका यूथिका-
पुन्नागं, करवीर-नाग-बकुलं द्रोणं जवा पाटला ।
द्वे जात्यौ खदिरं कुसुम्भ-कमलं नीपं कुरुण्टोत्पलं
मल्ली चम्पक-माधवी-बकमिदं पुष्पं हरौ शस्यते ।। 17 ।।
नन्द्यावर्तमशोक-किंशुक-कुशं बाणं त्रिसन्ध्याह्वयं
कूष्माण्डं शतपुष्पिका कुरुबकं सिंहास्यकं वातकम् ।
शस्तं पीतक-पारिभद्रक-जया-बन्धूक-नेपालिका-
गस्त्यं केतक-कुङ्कुमं प्रियमिदं भृङ्गञ्च पुष्पं हरेः ।। 18 ।।

दूर्व्वा तमाल-तुलसी-कुश-भृङ्गराज-
गायत्रि-बिल्व-दमनामलकीदलानि ।
शस्तानि धान्य-यव-सर्व्ववनस्पतीनां
पत्रन्तथा मरुबकं विहितं मुरारेः ॥ 19 ॥
पूर्वोक्त-पुष्पजातीनां सर्व्वासाञ्च्छदनानि च ।
वराहाक्रान्तमाम्रात-शिरीषकुसुमं शुभम् ॥ 20 ॥
मन्दारमर्क्क-धुत्तूरं शाल्मली काञ्चनालजम् ।
निषिद्धं विष्णुपूजायां पुष्पं बैभीतकन्तथा ॥ 21 ॥
शिरीषमाधवी शक्रं निषद्धं विहितं हरौ ।
नरसिंहस्य पूजायां निषिद्धं केतकी द्वयम् ॥ 22 ॥
उक्तातिरिक्तमरुणं कुसुमं न शस्तं
शुक्लातिकण्टकि-तरुप्रभवञ्च विष्णोः ।

इति विष्णोः ।

कुन्द, कुआ, कनैल, तिलै, सेवन्तिका (सेउँती), यूथिका (जूही), पुलाल, करबीर, नाग (नागकेशर-लंकेसर), भालसरि, दनूफ, जवा (ओड़हुल), पाड़रि, दुनू प्रकारक जाती (जैंती), खयर, कुसुम, कमल, कदम्ब, कुरुण्ट (पितपियरी), उत्पल (भेंट, कुमुदिनी आदि), मल्ली (वेला, वेली), चम्पा, माधवी (लालकुन्द) आ बकहुल ई सभ फूल विष्णुक पूजामे प्रशस्त अछि ॥ 17 ॥

नन्द्यावर्त (तूनि), अशोक, पलाश, कुश, बाण (पीयर फूलवला झाँटि), त्रिसन्ध्य (संझा) नामक फूल, कुम्हड़, कमल, कुरुबक (लाल फूल वला झाँटि), सिंहास्यक (बाकस), वातक (सनपटुआ), पीतक (पीतदारु-देवदार), पारिभद्रक (फरहद), जया (जैंती), बन्धूक (मधुरी), नेवारि, अगस्त्य, केतकी (केओला), केसरि एवं भङरिया एतेक फूल विष्णुकेँ प्रिय छनि ॥ 18 ॥

दूबि, तमाल, तुलसी, कुश, भङरिया, गायत्री (खयर), वेल, दमना (दोना), आमलकी (धात्री), एतेक गाछक पात विष्णुकेँ प्रशस्त अछि । धान, जौ, सभ प्रकारक वनस्पतिक पात तथा मरुबक (मरुआ)क पात सेहो विष्णुक पूजामे देबाक विधान अछि ॥ 19 ॥

पूर्वमे कहल गेल सभ फूलक क पात तथा वराहाक्रान्ता (रोहित), आम्रात (अमड़ा) आ शिरीषक फूल विष्णु पूजामे शुभ कहल गेल अछि ॥ 20 ॥

मन्दार (उजरा आक), आक (लाल रंगक), धथूर, सिम्मड़, कचनार तथा बहेड़क फूल विष्णुक पूजामे निषिद्ध अछि ॥ 21 ॥

शिरीष, माधवी (लाल कुन्द), शक्र (कोरैया) ई तीनू विष्णु पूजामे ने तँ विहित अछि ने निषिद्ध अछि, मुदा नरसिंह रूप विष्णुक पूजामे दुनू तरहक केओला निषिद्ध अछि ॥ 22 ॥

पूर्वमे कहल गेल फूलसँ अतिरिक्त लाल फूल विष्णुपूजामे प्रशस्त नहि अछि । उजरो फूल जे अधिक काँटवला गाछ मे हो सेहो प्रशस्त नहि ।

अथ सर्वदैवतम्

निर्गन्धपर्य्युषितमुत्कटगन्धकीट-
जुष्टानि सर्व्वसुरपूजनवर्जितानि ॥ 23 ॥
अन्तर्जलाक्षालितमानसनस्थं
स्वयं विशीर्णं भुवि संनिलीनम् ।
एतानि पुष्पाणि समस्तदेव-
पूजाविधावाहृरकर्म्मकाणि ॥ 24 ॥

इति सर्वदैवतम्

एहन फूल जाहिमे सुगन्ध नहि हो, वासि हो (देखू परिशिष्ट श्लोक- 28,29), तीव्र सुगन्ध हो, फूलकेँ कीड़ा कटने हो, ओहन सभ देवताक पूजामे वर्जित अछि ॥ 23 ॥

पानि मे डुबा कए कए धोअल, आसन पर राखल, अपनहि झड़ि कए माटि पर खसल– एतेक तरहक फूल सभ देवताक पूजामे अकार्यक कहल गेल अछि ॥ 24 ॥

(सिंगरहार आ भालसरि ई दू फूल माटियो पर खसल ग्राह्य थिक–

सर्वं भूमिगतं त्याज्यं शेफाली बकुलं विना– कृत्यसारसमुच्चय) ।

अथ पितृणाम्

माधवीतगरकुन्दकुब्जकं, यूथिका-जलजचम्पकोत्पलम् ।
कैरवञ्च शतपत्रिका तथा श्राद्धकर्मणि शुभानि शस्यते ॥ 25 ॥
मल्लिका तिलकबाणचम्पका-शोक-चूत-नवमल्लिकोद्भवम् ।
सर्वमेव कुसुमञ्च पाण्डुरं श्राद्धकर्मणि शुभं तुलस्यपि ॥ 26 ॥
उक्तेतरं लोहितमप्रशस्तं मन्दारमर्क्कोद्भव-भार्गिके च ।
शुक्लेतरं गन्धविहीनमुग्र-गन्धञ्च पुष्पं न हितं पितृभ्यः ॥ 27 ॥

इति पितृणाम्

माधवी (लालकुन्द), तगर, कुन्द, कुआ, जूही, कमल, चम्पा, उत्पल (उजरा कमल), कैरव (भेंट), शतपत्रिका (कमलभेद)– ई सभ फूल श्राद्ध कर्ममे शुभ मानल गेल अछि ॥ 25 ॥

मल्लिका (बेली, बेला), तिलक (तिलैया), बाण (पीरा झाँटि), चम्पा, अशोक, आम, नवमल्लिका (नेवारि) तथा पीयर रंगक सभ फूल आ तुलसी ई सभ श्राद्ध कर्ममे शुभ थिक ॥ 26 ॥

प्रशस्त फूलक रूपमे जे कहल गेल अछि ओहिसँ भिन्न लाल रंगक फूल प्रशस्त नहि अछि । संगहि (उजरो फूलमे) उजरा आक आ भार्गिका (बभनैठी)क फूल प्रशस्त नहि । उजरो फूलमे अन्य गन्धरहित अथवा तीव्र गन्ध बला फूल पितर केँ समर्पित नहि करी ॥ 28 ॥

(श्राद्धमे बिल्वपत्र आ कोनो रंगक ओड़हुल फूल निषिद्ध अछि ।)

पर्युषित-दोषरहितानि

पद्मानि सितरक्तानि कुमुदान्युत्पलानि च ।
एषां पर्य्युषिताशङ्का कार्य्या पञ्चदिनोर्ध्वतः ॥ 28 ॥
तुलस्यगस्ति-बिल्वानां नास्ति पर्य्युषितात्मता ।
बकस्यापि हि षण्मासाद्यावत् पर्य्युषितात्मता ॥ 29 ॥

उज्जर आ लाल कमल, कुमुद आ उत्पल एकरा सभक वासि होएबाक शंका पाँच दिनक बादहि करी । अर्थात् एक बेर तोड़ि कए राखल फूलसँ पाँच दिन धरि पूजा कएल जा सकैछ ॥ 28 ॥

तुलसी, अगस्त्य आ बेलपात ई वासि नहि होइछ । वकहुलक फूल सेहो छओ मासक बाद वासि होइत अछि ॥ 29 ॥

उपसंहारः

आहृत्य पत्रपुष्पं, पुण्यं कल्पतरु-पारिजातादेः ।
पूजाविधौ सुराणां, प्रशस्तदल-पुष्पमालेयम् ॥ 30 ॥
रुद्रधरेण मनोरम-गुण-जालेन गुम्फिता यत्नात् ।
वितनोतु तोषपोषं मनसि चिरं सर्वविबुधानाम् ॥ 31 ॥

इति महामहोपाध्याय श्रीरुद्रधरविरचिता पुष्पमाला समाप्ता ।

कल्पतरु आ पारिजातसँ (स्वर्गक वृक्ष; पक्षमें लक्ष्मीधरक कृत्यकल्पतरु आ मदन पारिजात आदि ग्रन्थसँ) देवताक पूजाविधानमे प्रशस्त पुष्प आ पत्र (पक्षमे-पुष्प आ पत्रक नाम) संग्रह कए प्रशस्त फूल आ पातक ई पुष्पमाला (फूलक माला । पक्षमे-प्रशस्त फूल आ पातक नामसँ युक्त पुष्पमाला नामक ई ग्रंथ) श्रीरुद्रधरक द्वारा रमणीय गुण (सूतक गुन) वला जाल (तन्तुश्रेणी) सँ यत्नपूर्वक गाँथल गेल (पक्षमे-रमणीय गुणक समूह जनिकामे छनि एहन ग्रन्थकार रुद्रधर द्वारा यत्नपूर्वक रचल गेल ।) ई फूलक माला (पक्षमे-पुष्पमाला ग्रन्थ) सभ देवताक (पक्षमे विद्वानक) प्रसन्नता बढ़ाबए आ विद्वानक ज्ञानक वृद्धि करए ॥ 30, 31 ॥

इति महामहोपाध्याय श्रीरुद्रधरक बनाओल पुष्पमाला समाप्त भेल ।

(लक्ष्मीधरकृत **कृत्यकल्पतरु**– ई लक्ष्मीधर कन्नौजक महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेवक सान्धिविग्रहिक तथा हृदयधर भट्टक पुत्र छलाह, जे गोविन्दचन्द्र मिथिलाक किछु भागक शासन कएलनि । हुनक आज्ञासँ लक्ष्मीधर कृत्यकल्पतरु आ व्यवहारकल्पतरु आदि नामक ग्रन्थ लिखल जकर मान्यता मिथिलामे भेटलैक । हिनक समय 1100 ई.सँ 1150 ई. धरि मानल गेल अछि ।

मदनपालकृत **मदनपारिजात**-उक्त ग्रन्थ मिथिलाक प्रामाणिक स्मार्त निबन्ध थिक । किछु विद्वानक अनुसार ई महाराज गोविन्दचन्द्रक पिता मदनपालक बनाओल थिक । अन्य विद्वान मानैत छथि जे मदनपालक आश्रित विश्वेश्वर भट्टक रचना थिक ।)

●